'महिलाओं के अंदर ही समाहित है सशक्तीकरण की ताकत'

शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र बचा हो जहां महिलाओं ने अपना हुनर न दिखाया हो। अधिकतर क्षेत्रों में तो वे पुरुषों से भी आगे निकल चुकी हैं। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या फिर कॉरपोरेट जगत हर क्षेत्र में महिलाएं निखरकर सामने आयी हैं। कॉरपोरेट जगत से जुड़ी ऐसी ही एक महिला हैं के नरा एचएसबीसी ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड की संस्थापक सदस्य और चीफ इन्वेस्टमेंट ऑफिसर **रितु गंगरादे अरोड़ा**। रितु पिछले 16 वर्षों से इंश्योरेंस सेक्टर से जुड़ी हुई हैं। अपने हुनर, प्रतिभा और कार्य शैली के दम पर रितु ने इंश्योरेंस सेक्टर में अपनी अलग छाप छोड़ी है। **सन्मार्ग** की **मधु सिंह** ने पहचान स्तंभ के तहत **रितु अरोड़ा** से खास बातचीत की। पेश हैं बातचीत के मुख्य अंश :

रितु अरोड़ा

प्र. सबसे पहले हमें अपने परिवार के बारे में बताएं। आपके परिवार ने आपका कितना साथ दिया?

उ. मैं एक ऐसे परिवार से जुड़ी हूं जहां शिक्षा को काफी अधिक महत्व दिया जाता है। मेरा परिवार शिक्षाविदों और विशेषज्ञों का परिवार है। अत: मेरे परिवार में ऐसे सदस्यों की कोई कमी नहीं रही जिनसे मुझे हमेशा प्रेरणा मिलती रही है। मैंने हैदराबाद में अपना काफी जीवन गुजारा जहां मेरे पिताजी एक इंजीनियरिंग कंपनी में सीईओ थे। मेरी मां काफी पढ़ी - लिखी होने के बावजूद बाहर का कामकाज छोड़ अपने बच्चों की देखरेख के लिए घर पर ही रहती थी।

प्र. अपनी शैक्षणिक योग्यता के बारे में बताएं।

उ. मैंने अपनी पढ़ाई हमेशा जारी रखी। मैंने एस. पी. जैन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड रिसर्च, मुंबई से फाइनांस के क्षेत्र में पोस्ट ग्रेजुएशन किया। इसके साथ ही मैंने आईसीडब्ल्यूएआई (इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एण्ड वर्क्स एकाउंटेंट) भी किया है। मैं बी. कॉम (ऑनर्स) में लेडी टॉपर रह चुकी हूं। इसके अलावा कोचिंग फाउंडेशन ऑफ इंडिया से पोस्ट ग्रेजुएट करने के बाद मुझे बतौर एकजीक्यूटिव कोच द्वितीय प्रमाणिकता मिली।

प्र. आपने इंश्योरेंस सेक्टर में जाने का कैसे सोचा?

उ. पोस्ट ग्रेजुएट होने के बाद मैंने बतौर मैनेजमेंट ट्रेनी मेरिको इंडस्ट्रीज में प्रशिक्षण लेना शुरू किया। मुझे फाइनांस, निवेश, पूंजी बाजार, इकोनोमिक्स, प्रोक्योरमेंट व स्ट्रेटेजी में लगभग 18 वर्षों का अनुभव है। मैं कई महत्वपूर्ण संस्थाओं के साथ काम करते हुए अब इंश्योरेंस सेक्टर में आ चुकी हूं। मैंने एफएमसीजी व बीएफएसआई सेक्टरों में बहुत काम किया है और भारत में दो अत्यंत सफल बीएफएसआई कंपनियों की संस्थापकों में रह चुकी हूं। मुझे वुमेन इन लीडरशिप फोरम 2011 की ओर से लीडिंग वुमेन इन फाइनांस और वुमेन लीडर ऑफ च्वॉइस 2013 पुरस्कार मिल चुका है।

प्र. अपने निजी अथवा विवाहित जीवन के बारे में हमें बताएं।

उ. लगभग 17 वर्षों पहले मेरा विवाह हुआ था। मेरी शादीशुदा जिंदगी के साथ काम का तालमेल बैठाना काफी मुश्किल नहीं रहा। मेरे पति के सहयोग के कारण सब कुछ बहुत ही आसान रहा। अब मेरी एक बेटी और 8 वर्ष का एक बेटा है।

प्र. जीवन के हर मोड़ पर किसने आपका सबसे अधिक साथ निभाया?

उ. मेरी मां और मेरी सास दोनों ने ही जीवन के हर मोड़ पर सबसे अधिक साथ निभाया। वे दोनों ही मेरे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। उनसे मुझे बेशुमार प्यार और सहयोग मिला है। मेरी मां ने मेरी बुनियाद रखी और मुझे सपने देखना सिखाया जबकि मेरी सास ने मेरे सपनों को साकार करने के लिए मुझमें साहस भरा और निर्धारित लक्ष्य को पाने के लिए मेरा पोषण किया।

प्र. अपनी उपलब्धियों का श्रेय आप किसे देंगी?

उ. मेरे परिवार, पति, अभिभावक और सास - ससुर को मैं अपनी उपलब्धियों का श्रेय देना चाहूंगी। मेरे करियर और सपनों को पूरा करने के लिए मुझे मेरे परिवार से प्रेरणा मिली। मेरी उन्नति और विकास में मेरे सभी साथियों और बॉस का पूरा सहयोग रहा। उनके भरोसे ने ही मुझे अपनी प्रतिभा साबित करने का मौका दिया।

प्र. आपके जीवन का मूल मंत्र क्या है?

उ. भगवान ने मुझे ऐसी चीजों को स्वीकार करने के काबिल बनाया है जिन्हें मैं बदल नहीं सकती। इसके साथ ही उन्होंने मुझे इतना साहस दिया है कि मैं चीजों को बदल सकूं।

प्र. महिलाओं के प्रति बढ़ती आपराधिक घटनाओं के बारे में क्या कहेंगी?

उ. 21वीं सदी के युग में हमारे देश में महिलाओं के साथ जैसा व्यवहार किया जाता है, उसे देखकर बड़ा ही आश्चर्य और दु:ख होता है। मुझे लगता है कि चीजें केवल उस समय ही बदल सकती हैं जब महिलाएं अपने प्रति हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाएं और चीजों को सहज रूप से लेने से रोकें। अपने लिए हमें स्वयं खड़े होने की आवश्यकता है। तभी हमारे समाज में परिवर्तन संभव है।

प्र. महिला सशक्तीकरण के बारे में क्या कहेंगी?

उ. सशक्तीकरण अंत:करण से ही आता है। समाज में बाहर से सशक्तीकरण लाना संभव नहीं है। अत: भारत में शक्ति के रूप में मानी जाने वाली महिलाओं को अपने अंदर से सशक्तीकरण लाने की आवश्यकता है। एक दूसरे का साथ देते हुए महिलाओं को आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

प्र. सन्मार्ग के पाठकों को क्या संदेश देना चाहेंगी?

उ. हमेशा इस बात के लिए तैयार रहें कि आपके साथ कुछ भी आशा के विपरीत हो सकता है। अपनी सुरक्षा के लिए तैयारी बहुत जरूरी होती है। हमेशा भविष्य की अनिश्चितताओं से लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए।